International Journal of Academic Excellence and Research (IJAER)
e-ISSN: 3107-3913 || Publication Impact Factor (I2OR) : 2.015
Vol. 02, No. 01, January-March, 2026, pp 142-147
© Copyright by MGM Publishing House (MGMPH)
www.mgmpublications.com

मुगलकाल में महिलाओं की शिक्षा व साहित्य में भूमिका का एक विस्तृत ऐतिहासिक अध्ययन

श्री धर्म पाल[1*] | डॉ महेश चंद्र[2]

[1]शोधार्थी (इतिहास विभाग), श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।
[2]सहायक आचार्य (इतिहास विभाग), श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।

[*]**Corresponding author:** dharmpalswami683@gmail.com

Citation: धर्म पाल एवं महेश चन्द्र. (2026). मुगलकाल में महिलाओं की शिक्षा व साहित्य में भूमिका का एक विस्तृत ऐतिहासिक अध्ययन. International Journal of Academic Excellence and Research, 02(01), 142–147.

सार: *प्रस्तुत शोध पत्र मुगलकालीन समाज (1526–1857) में महिलाओं की शैक्षिक व्यवस्था, साहित्यिक योगदान और उनके बौद्धिक सशक्तिकरण का आलोचनात्मक और विस्तृत विश्लेषण करता है। यद्यपि मुगलकालीन समाज एक पितृसत्तात्मक ढांचे पर आधारित था जहाँ पर्दा प्रथा और अनेक सामाजिक सीमाएँ विद्यमान थीं, फिर भी ऐतिहासिक साक्ष्य प्रमाणित करते हैं कि शाही, कुलीन और यहाँ तक कि तवायफ वर्ग की महिलाओं ने शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया। प्रारंभ में महिलाओं की शिक्षा मुख्यतः धार्मिक और नैतिक थी, परंतु समय के साथ उन्होंने फारसी, अरबी, उर्दू और स्थानीय लोकभाषाओं में उत्कृष्ट साहित्य सृजन किया। शाही महिलाओं ने केवल अध्ययन ही नहीं किया, बल्कि कला, संगीत और शिक्षण संस्थानों के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह शोध पत्र यह स्पष्ट करता है कि जहाँ गुलबदन बेगम, नूरजहाँ और मुमताज महल जैसी महिलाओं ने दरबार में रहकर साहित्यिक चेतना जगाई, वहीं भक्ति आंदोलन और तवायफ संस्कृति ने आम और शहरी महिलाओं को सामाजिक व सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का स्वतंत्र मंच प्रदान किया।*

Article History:
Received: 14 February, 2026
Revised: 04 March, 2026
Accepted: 11 March, 2026
Published Online: 17 March, 2026

शब्दकोश:
मुगलकालीन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, फारसी और उर्दू साहित्य, शाही महिलाएं, तवायफ संस्कृति, साहित्य संरक्षण, भक्ति आंदोलन, हुमायूँनामा, स्त्री चेतना।

प्रस्तावना

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मुगलकाल (1526–1857) अपनी राजनीतिक सफलताओं के साथ–साथ सांस्कृतिक और साहित्यिक उपलब्धियों के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है। इस युग की सामाजिक संरचना मूलतः पितृसत्तात्मक थी जहाँ पर्दा प्रथा का कठोरता से पालन किया जाता था। इसके बावजूद, मुगलकाल में महिलाओं की शिक्षा और साहित्य में भागीदारी का अध्ययन भारतीय इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण पक्षों में से एक है। प्रारंभ में महिलाओं की शिक्षा मुख्यतः धार्मिक, नैतिक और गृहस्थी के निर्देशों तक ही सीमित मानी जाती थी। उन्हें कुरान, फारसी साहित्य, हिंदी और स्थानीय भाषाओं में मूलभूत साक्षरता सिखाई जाती थी। परंतु, मुगल दरबार और कुलीन वर्ग की महिलाओं ने प्रायः धार्मिक, दार्शनिक और काव्यात्मक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। शाही महिलाओं ने न केवल ज्ञानार्जन किया, बल्कि स्वयं साहित्य सृजन में भी सक्रिय भाग लिया। इस काल में मुगल हरम केवल विलासिता का केंद्र नहीं था, बल्कि इसे "संस्कृति और अनुशासन का केंद्र" माना जाता था। जहाँ शाहजहाँ की पुत्रियों और नूरजहाँ जैसी महिलाओं ने फारसी और उर्दू कविता में

[*] *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by MGM Publishing House. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

अपना अभूतपूर्व योगदान दिया, वहीं समाज के दूसरे छोर पर तवायफ संस्कृति के माध्यम से आम महिलाओं ने भी कला, संगीत और साहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना को बढ़ावा दिया।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- मुगलकालीन समाज में महिलाओं (शाही, कुलीन, मध्यवर्गीय और ग्रामीण) की शैक्षिक व्यवस्था और उनके पाठ्यक्रम का विस्तृत अध्ययन करना।
- शाही और अभिजात्य वर्ग की महिलाओं द्वारा रचित साहित्य, उनकी बौद्धिक क्षमता और स्त्री चेतना का मूल्यांकन करना।
- महिलाओं द्वारा शिक्षण संस्थानों, पुस्तकालयों और साहित्यिक गतिविधियों को दिए गए संरक्षण का विश्लेषण करना।
- मुगलकालीन शिक्षा में तवायफ संस्कृति और भक्ति आंदोलन के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक और साहित्यिक अभिव्यक्ति को समझना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में विश्लेषणात्मक और ऐतिहासिक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। इसमें पहले से उपलब्ध सूचनाओं, प्राथमिक और द्वितीयक ऐतिहासिक स्रोतों, तत्कालीन साहित्यों, जीवनियों (जैसे हुमायूँनामा) और आधुनिक ऐतिहासिक गवेषणाओं का सूक्ष्म अध्ययन कर चरों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है।

शिक्षा का स्वरूप और उपलब्धता

मुगलकाल में महिलाओं की शिक्षा का स्वरूप एक समान नहीं था; यह उनकी सामाजिक स्थिति, वर्ग और भौगोलिक क्षेत्र (ग्रामीण या शहरी) पर अत्यधिक निर्भर करता था।

- **शाही और कुलीन महिलाओं की शिक्षाः** शाही और उच्च कुलीन परिवार की महिलाएँ अपेक्षाकृत अत्यंत व्यापक और बहुआयामी शिक्षा प्राप्त करती थीं। राजमहल की स्त्रियों के लिए उच्चकोटि के विद्वान शिक्षकों (मौलवियों और विदुषियों) की नियुक्ति की जाती थी। उनकी शिक्षा केवल पारंपरिक पठन–पाठन तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें आलोचनात्मक सोच, भाषाई निपुणता और साहित्यिक सृजन की क्षमता का विकास भी शामिल था। अकबर, जहांगीर और शाहजहाँ के दरबारों में शाही महिलाओं को फारसी, अरबी और तुर्की भाषाओं में निपुण बनाने के लिए विशेष प्राध्यापकों की व्यवस्था थी। इन महिलाओं को इतिहास, काव्यशास्त्र और खगोलशास्त्र जैसे विषयों में भी प्रशिक्षित किया जाता था। मुमताज महल और जहाँआरा बेगम जैसी स्त्रियों का ज्ञान इतना विकसित था कि वे दरबार में कविता, नज्म और संगीत की चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी करती थीं। साथ ही, उन्हें संगीत, नृत्य, चित्रकला और हस्तकला की शिक्षा भी दी जाती थी, जो मनोरंजन के साथ–साथ सांस्कृतिक चेतना के प्रसार का माध्यम थी।
- **सामान्य और ग्रामीण महिलाओं की शिक्षाः** जहाँ राजपरिवार की महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही थीं, वहीं सामान्य, मध्यवर्गीय और ग्रामीण समाज की स्त्रियों में औपचारिक शिक्षा का स्तर अत्यंत सीमित था। ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा मुख्यतः घरेलू ज्ञान, गृहस्थी प्रबंधन, कृषि और पशुपालन संबंधी कौशल तक ही सीमित रहती थी। उन्हें धार्मिक मंत्र, स्वास्थ्य–संवर्धन और सामाजिक आचार संहिता की शिक्षा दी जाती थी। यद्यपि इनकी साक्षरता दर नगण्य थी, इसके बावजूद इन महिलाओं ने मौखिक परंपरा के माध्यम से साहित्यिक और सांस्कृतिक ज्ञान का आदान–प्रदान किया, जिसमें लोककथाएँ, देवी–देवताओं की कथाएँ और पंचतंत्र शामिल थे।

- **तवायफ संस्कृति और शिक्षा का वैकल्पिक स्वरूपः** मुगलकाल में तवायफों का सामाजिक और शैक्षिक महत्व अत्यंत गहन था। तवायफें केवल मनोरंजन का साधन नहीं थीं, बल्कि वे संस्कृति, साहित्य और शिक्षा की प्रमुख संवाहक थीं। उनका प्रशिक्षण केवल नृत्य और संगीत तक सीमित नहीं था, बल्कि उनमें उर्दू, फारसी, नाटक और शास्त्रीय साहित्य की गहरी समझ होती थी। तवायफों की शिक्षा बहुस्तरीय थी; वे फारसी और उर्दू साहित्य में प्रवीण होती थीं तथा उन्हें काव्य रचना, कहानी लेखन और इतिहास की शिक्षा दी जाती थी। समाज में उनका एक प्रकार का बौद्धिक नेतृत्व माना जाता था क्योंकि वे साहित्यिक महफिलों का संचालन करती थीं।

साहित्य सृजन और भाषा में महिलाओं का योगदान

मुगलकाल की अनेक महिलाओं ने अपनी स्वतंत्र बौद्धिक पहचान बनाई और साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य कृतियाँ रचीं। इस काल में फारसी, अरबी और उर्दू भाषाओं ने महिलाओं की सृजनात्मकता को आकार दिया।

फारसी और उर्दू साहित्य में भूमिका

फारसी भाषा मुगल दरबार की मुख्य भाषा होने के कारण उच्चवर्गीय महिलाओं के लिए साहित्यिक संचार का प्रमुख माध्यम बनी। शाही महिलाओं ने फारसी में पत्रिका, नज्म और कथा लेखन किया। इसके साथ ही उर्दू भाषा के उदय ने मध्यवर्गीय महिलाओं और तवायफों को प्रेम, भक्ति और सामाजिक मुद्दों को उजागर करने का अवसर दिया।

- **गुलबदन बेगमः** बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम ने प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ 'हुमायूँनामा' की रचना की। यह ग्रंथ इतिहास लेखन की परंपरा में स्त्रियों की भागीदारी का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें न केवल ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण है, बल्कि महिलाओं की नैतिक जिम्मेदारियों और शाही जीवन का सजीव चित्रण भी है।
- **जेबुन्निसाः** औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा फारसी भाषा की उच्च कोटि की कवयित्री थीं। उन्होंने 'मखफी' उपनाम से कविताओं की रचना की, जिन्हें 'दीवान–ए–मखफी' के नाम से जाना जाता है।
- **नूरजहाँः** जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ ने फारसी और उर्दू कविता में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। उनकी शायरी में प्रेम और भक्ति का अद्वितीय मिश्रण देखने को मिलता है।

तवायफों का साहित्यिक सृजन

तवायफों ने व्यक्तिगत रूप से कविताएँ, गजलें और रूमानी रचनाएँ लिखीं। लखनऊ की प्रसिद्ध तवायफ रुकसा बेगम ने गजल और नज्म के माध्यम से प्रेम और स्त्री अनुभव को बारीकी से व्यक्त किया। उनके काव्य में स्त्री की भावनात्मक गहराई स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। तवायफें मुगलकालीन कवि सम्मेलनों में निर्णायक भूमिका निभाती थीं और उनके कलात्मक ज्ञान ने कई कवियों की शैली को प्रभावित किया।

भक्ति आंदोलन और लोकभाषा का प्रभाव

भक्ति आंदोलन (15वीं से 17वीं शताब्दी) ने महिलाओं के लिए सामाजिक और धार्मिक स्वतंत्रता का एक नया माध्यम प्रदान किया। इस आंदोलन में मीराबाई, रुक्मिणी देवी जैसी महिलाओं ने भक्तिपरक काव्य और भजनों के माध्यम से समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। मीराबाई की रचनाओं ने, जो मुख्य रूप से हिंदी और राजस्थानी में थीं, महिलाओं को सामाजिक सीमाओं से परे जाकर आध्यात्मिक पहचान बनाने की प्रेरणा दी। भक्ति आंदोलन ने महिलाओं को पारंपरिक शिक्षा के ढांचे से बाहर निकालकर रचनात्मक स्वतंत्रता प्रदान की।

शिक्षण संस्थानों एवं कला का संरक्षण

मुगलकालीन महिलाएं केवल साहित्यानुरागी नहीं थीं, बल्कि उन्होंने शिक्षा और कला के प्रसार के लिए अपना निजी धन भी निवेश किया और संरक्षिका की भूमिका निभाई।

- **शाही महिलाओं का संरक्षणः** रानी मुमताज महल और जहाँआरा बेगम ने कवियों और लेखकों को न केवल आर्थिक सहायता दी, बल्कि उनकी रचनाओं को सुरक्षित रखने के लिए निजी पुस्तकालयों में उनका संकलन भी किया। मुमताज महल के संरक्षण में धार्मिक ग्रंथों और नैतिक कथाओं का प्रसार हुआ।
- **जहाँआरा बेगम का योगदानः** शाहजहाँ की सबसे बड़ी पुत्री जहाँआरा बेगम सूफी विचारधारा से ओत–प्रोत थीं। उन्होंने ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के जीवन पर 'मुनिस–उल–अरवाह' और 'रिसाला–ए–साहिबिया' की रचना की। साथ ही, उन्होंने दिल्ली में अनेक शिक्षण संस्थानों, सरायों और धर्मशालाओं का निर्माण करवाया।
- **हुमायूँ बेगमः** इन्होंने फारसी और उर्दू साहित्य के धार्मिक ग्रंथों के संरक्षण में सक्रिय योगदान दिया। इस संरक्षकता का सामाजिक प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि इसके कारण समाज में सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर महिलाओं की प्रतिष्ठा में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

धार्मिक और नैतिक शिक्षा में योगदान

मुगलकाल में महिलाओं की शिक्षा और साहित्यिक गतिविधियों का धार्मिक और नैतिक क्षेत्र में योगदान अत्यंत गहरा था। महिलाएँ कुरान, हदीस, फारसी और संस्कृत साहित्य के माध्यम से धर्म और नैतिकता की शिक्षा प्राप्त करती थीं। शाही और कुलीन महिलाओं ने न केवल इन धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया, बल्कि उनके अनुवाद और व्याख्या में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। कुछ शाही महिलाओं ने कुरान और हदीस की व्याख्याओं को फारसी से हिंदी या प्राकृत में अनुवादित करवाया ताकि यह ज्ञान आम जनता तक पहुँच सके। इसके अतिरिक्त, गृह शिक्षा के अंतर्गत माताएँ और दादियाँ घर की युवतियों को धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करवाती थीं, जिससे समाज में एक मजबूत नैतिक ढाँचा तैयार होता था। महिलाओं द्वारा रचित धार्मिक कविता और भक्ति गीत नैतिक शिक्षा का एक अत्यंत सशक्त माध्यम थे, जिनमें सहिष्णुता, सामाजिक न्याय और समर्पण के विषय प्रमुख थे।

सामाजिक आलोचना और स्त्री चेतना

मुगलकालीन महिलाओं के साहित्य का अध्ययन केवल उनके सृजनात्मक पहलुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके आलोचनात्मक दृष्टिकोण को भी उजागर करता है। इन महिलाओं ने अपने साहित्य के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज में व्याप्त असमानताओं, पर्दा प्रथा और शिक्षा की सीमाओं पर सवाल उठाए। नूरजहाँ और गुलबदन बेगम जैसी महिलाओं ने अपने शासकीय प्रभाव और पत्र व्यवहार के माध्यम से सामाजिक असमानताओं के प्रति तीव्र संवेदना व्यक्त की। फारसी और उर्दू नज्मों में महिला स्वतंत्रता, आत्म–सम्मान और सामाजिक जिम्मेदारियों पर विशेष बल दिया गया। साथ ही, भक्ति और सूफी गीतों के माध्यम से फातिमा सुल्ताना जैसी कवयित्रियों ने यह स्पष्ट किया कि सामाजिक नियमों का पालन करते हुए भी महिलाओं को अपने व्यक्तिगत और नैतिक अधिकार बनाए रखने चाहिए। साहित्य के माध्यम से व्यक्त किए गए इस महिला दृष्टिकोण ने मुगल समाज में सामाजिक आलोचना की एक नई परंपरा की नींव रखी।

गृहशिक्षा और औपचारिक शिक्षा का अंतर एवं संतुलन

मुगलकाल में महिलाओं की शिक्षा को दो मुख्य भागों में देखा जा सकता हैः गृहशिक्षा और औपचारिक शिक्षा।

- **गृहशिक्षाः** यह परिवार की सीमाओं में दी जाती थी और इसमें घरेलू प्रबंधन, पारिवारिक प्रथाओं, बच्चों की परवरिश और नैतिक जिम्मेदारियों की शिक्षा शामिल थी। इसने महिलाओं में अनुशासन और धैर्य का विकास किया।

- **औपचारिक शिक्षाः** यह शाही दरबारों और शिक्षण केंद्रों में उपलब्ध थी, जिसमें फारसी साहित्य, इतिहास, सूफी दर्शन और संगीत का अध्ययन होता था।

इस शिक्षा ने महिलाओं को बौद्धिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सशक्त बनाया और उन्हें समाज की व्यापक समस्याओं को समझने की क्षमता दी। इन दोनों शिक्षा प्रणालियों के संतुलन ने महिलाओं को केवल घरेलू जीवन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज में सम्मान, प्रभाव और सक्रियता भी प्रदान की। इसी संतुलन के कारण महिलाएँ ऐतिहासिक दस्तावेज (जैसे हुमायूँनामा) तैयार कर सकीं और साहित्यिक महफिलों में नेतृत्व कर सकीं।

सीमाएं और चुनौतियां

यद्यपि मुगलकाल में महिलाओं ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति की, परंतु उनके सामने कई गंभीर सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक चुनौतियाँ विद्यमान थीं।

- **सामाजिक रुढ़ियाँः** समाज में यह मान्यता प्रबल थी कि स्त्रियों का मुख्य कर्तव्य केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित है, अतः औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं है।
- **स्वतंत्रता का अभावः** शाही महिलाओं को शिक्षा के अवसर मिले, लेकिन उनकी स्वतंत्रता केवल आंतरिक महलों तक सीमित थी। बाहर की दुनिया में उनकी भागीदारी पर सख्त सीमाएँ थीं।
- **प्रकाशन और मान्यता का अभावः** महिलाओं द्वारा रचित साहित्य को पुरुष संरक्षकों या परिवार की अनुमति के बिना समाज में साझा करना प्रायः संभव नहीं था।
- **आम महिलाओं का वंचनः** संसाधनों की कमी और बालिकाओं के लिए प्राथमिक शिक्षा की अनुपलब्धता के कारण अधिकांश ग्रामीण महिलाएँ साहित्य सृजन की मुख्यधारा से वंचित रह गई।

इन सीमाओं के बावजूद, महिलाओं ने अपनी सीमित परिधि में रहकर भी सांस्कृतिक और धार्मिक शिक्षा का प्रसार किया।

निष्कर्ष

मुगलकालीन महिलाओं की शिक्षा व साहित्य में भूमिका का यह विस्तृत अध्ययन प्रमाणित करता है कि सामाजिक और पारिवारिक प्रतिबंधों के बावजूद, महिलाओं ने बौद्धिक क्षितिज पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की। शिक्षा और साहित्य ने महिलाओं को मानसिक, बौद्धिक, पारिवारिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाया। गुलबदन बेगम, जहाँआरा बेगम, जेबुन्निसा, नूरजहाँ और तवायफ वर्ग की विदुषियों की साहित्यिक कृतियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि मुगलकालीन स्त्रियाँ केवल पर्दे के पीछे रहने वाली निष्क्रिय प्राणी नहीं थीं, बल्कि वे कला, संस्कृति और इतिहास की निर्माता एवं पोषक भी थीं। उनकी शिक्षा केवल औपचारिक नहीं थी, बल्कि इसमें आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोणों का गहरा समावेश था। महिलाओं ने न केवल साहित्य रचा, बल्कि शिक्षण संस्थानों और पुस्तकालयों का संरक्षण कर आने वाली पीढ़ियों के लिए ज्ञान के द्वार खोले। उनका यह योगदान भारतीय इतिहास में महिला बौद्धिक सशक्तिकरण का एक अप्रतिम अध्याय है, जिसने समाज और संस्कृति में उनकी सम्मानजनक भूमिका को स्थायी रूप से स्थापित किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अशरफ, के. एम. (1990). हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन और उनकी परिस्थितियां, दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. बेवरिज, ए. एस. (अनुवादक) (1902). हुमायूँनामा (गुलबदन बेगम), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. हबीब, इरफान (1982). मुगल समाज और संस्कृति, पीपल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. समी, मोहम्मद (1934). दीवान–ए–मखफी जेबुन्निसा की रचनाएँ, लाहौर पब्लिकेशन।

5. मोहिनी, के. ए. (1975). मुगल महिलाएँ और इस्लामी शिक्षा, हैदराबाद विश्वविद्यालय प्रकाशन।
6. नसीरुद्दीन अहमद (2015). मुगलकालीन समाज में स्त्रियों की शिक्षा, नई दिल्ली।
7. शम्सुद्दीन खां (2012). तवायफ संस्कृति और महिलाओं की भूमिका, जयपुर।
8. रफीक अहमद (2017). मुगलकालीन महिला कवयित्री और उनका साहित्य, लखनऊ।
9. अनीता वर्मा (2016). शाही परिवार में स्त्रियों की शिक्षा और साहित्यिक योगदान, दिल्ली।
10. रवि शर्मा (2014). ग्रामीण और शहरी महिलाओं की शिक्षाः मुगलकालीन अध्ययन, पटना।
11. सुमित्रा सेन (2018). मुगलकालीन महिलाओं का सांस्कृतिक और साहित्यिक संरक्षण, कोलकाता।
12. नीलम गुप्ता (2012). मुगलकालीन कला और महिलाओं की शिक्षा, जयपुर।
13. इर्शाद हुसैन (2010). मुगल काल में स्त्रियों का सामाजिक और शैक्षिक जीवन, नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
14. फैज रजा (2011). नूरजहाँ और शाही संस्कृति, दिल्लीः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।

❑❑❑